DOI: https://doi.org/10.46632/cllrm/4/3/4

Contemporaneity of Language and Literature in the Robotized Millennium
Vol: 4(3), 2022
REST Publisher; ISBN: 978-81-936097-3-6
Website: http://restpublisher.com/book-series/cllrm/

ऑनलाइन मीड़िया एवं हिंदी कविता;वैश्विक महामारी के दौर में

श्यामलाल एम् एस,

सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तेवरा

दूरभाष – 9400755292, संबंधित लेखक ईमेल: syamlalms@shcollege.ac.in

विश्व की संपूर्ण मानवता कोरोना महामारी के चंगुल से आज भी पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुई है। सन 2020 के शुरुआत से ही लोग घर के चार दीवारों के अंदर न चाह कर भी बंद रहने के लिए बाध्य बने । सन 2021 विश्व मानवता के लिए आशा की एक नई किरण थी किंतु महामारी के दूसरे तथा तीसरे लहरों ने जीवन को झकझोर कर रख दिया। वास्तविक जगत की आपसी दूरियां बढ़ने लगी। कहते हैं 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' और समाज से हटकर उसका अस्तित्व नहीं रहता परंतु कोरोना ने इसे भी गलत साबित कर दिया। घुट -घुट कर भी लोग अकेले समाज से हटकर रहने के लिए आदी हो गए। न कोई सामाजिक समारोह न कोई त्योहार और न ही कोई आडंबर। कालचक्र की गति तक धीमी होने लगी, परंतु मनुष्य की तृष्णा, जिजीविषा एवं महत्वाकांक्षा की कोई सीमा नहीं। उसने विकल्प की तलाश की। संचार क्रांति एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने मनुष्य का साथ दिया। कुकाल में भी उसने भरोसा नहीं छोड़ा। सोशल मीड़िया एवं अन्य माध्यमों से आपसी दूरियां कम होती गई। परंतु वास्तविक दूरियां तब भी बनी रहीं। विश्वग्राम का साकार रूप उभर कर प्रत्यक्ष में आने लगा। सोशल मीड़िया का प्रभाव मनुष्य जीवन में क्रांति पैदा करने लगी थी। सूचना विस्फोट के शुरुआती दौर में समाचार पत्र रेडियो तथा टेलिविज़न ने जो भूमिका निभाई थी उसकी जगह ऑरकुट,फेसबुक व्हाट्सएप,इंस्टाग्राम,ट्विटर तथा चैटिंग और डेटिंग के अन्य माध्यमों ने ले ली।अंतरजाल के ज़रिए संचार क्रांति की जो नई लहर सामने आई जिसने मनुष्य की बनी बनाई संपूर्ण अवधारणाओं को चकनाचूर कर दिया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सहायता से एक नूतन माध्यम संस्कृति उपस्थित हुई जो पूर्णता दृश्य श्रव्य तथा लिखित रूप से समय की अनिवार्यता बनती गई।श्री.अवधेश प्रसाद सिंह के अनुसार 'इंटरनेट के रूप में आधुनिक मीड़िया का एक ऐसा चौकता हुआ शक्तिशाली माध्यम आज हमारे सामने हैं जिसने पूरे विश्व की सूचना तंत्र को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इलेक्ट्रॉनिक संचार युग का एक सर्वाधिक विस्मयकारी सक्षम और तेज़ सूचना-संवाहक पूरे समाज को बदलने में प्राणप्रण से जुड़ा है।' [1]

[1] अवधेश प्रसाद सिंह, सूचना प्रौद्योगिकी के नए रूप,आज का मीडिया,सं – शंभूनाथ, पृ.127

Copyright@ 2022 REST Publisher

महामारी के कारण जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक एवं धार्मिक कार्यक्रम रुके पड़े थे वह संभवत: गूगल मीट, ज़ूम,फेसबुक लाइव तथा व्हाट्सएप जैसे आधुनिक तकनीकों से पुनः कार्यरत होने लगा। पढ़ाई से लेकर संगोष्ठी तक गूगल मीट एवं ज़ूम के ज़रिए होने लगा जिससे जो सामाजिक दायरा या परिप्रेक्ष्य था वह अत्यंत व्यापक एवं वैश्विक होने लगा। कर्मचारियों से लेकर डॉक्टर तक, पादरी से लेकर पुजारी तक स्क्रीन के ज़रिए हमारे सामने अवतरित हुए। साहित्य भी इस आमूलचूल परिवर्तन से अनछुआ नहीं रहा। पत्रकारिता से लेकर प्रकाशन तक एक हद तक संपूर्ण रूप से रुक सा गया था। प्रिंट मीडिया पर तो एकदम ताला ही लग गया था,परंतु क्या रचनाकर्मी लोगों की सृजनात्मकता को कोई रोक सकता है? लेखकों ने घर बैठे जिस संघर्ष, घुटन एवं तनाव का अनुभव किया उससे मुक्ति पाने के लिए ऑनलाइन माध्यमों का सहारा लिया । कविता, कहानी,लेख एवं निबंधों के रूप में कई प्रकार की साहित्यिक रचनाएं प्रस्फुटित होकर सामने आने लगी । हम प्रतिबंधों का सामना करने लगे और स्थिति पहले जैसे होने लगी । वैकारिक एवं वैचारिक स्तर पर मनुष्य एवं साहित्य का बहुत गहरा संबंध है । सृजनशील लेखक सामाजिक गतिविधियों को कभी अनदेखा नहीं कर सकते।विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने एवं संघर्ष करने की शक्ति उन्होंने अर्जित की । कोरोना के दौर में दुनिया जब घरबंद की स्थिति में थी तो पारिवारिक रिश्ते ज़्यादा मज़बूत होने लगी। कई ऐसे युवा जो कारपेट संस्कृति के मायाजाल में फंस गए थे और अपने हृदय की सृजनात्मकता एवं सहृदयता नष्ट कर चुके थे उन्हें भी पुन: सृजनशील बनने का अवसर मिला।सोशल मीडिया एवं ऑनलाइन माध्यमों के विस्तृत एवं व्यापक धरातल पर अपनी कुंठा और अंतर्द्वंद को वाणी देने का मौका मिला।कई युवा लेखक,कवि नेपथ्य से रंगमंच की ओर अग्रसर हुए । उन्हें प्रकाशन एवं वितरण की सारी मुश्किलों से परे होकर स्वतंत्र लेखन करने का अवसर मिला। नवनीत, नोटनल, पुस्तकनामा, हिंदवी, कविताकोश,जानकीपुल आदि से लेकर कई मुख्यधारा की पत्रिकाओं ने भी ई-मैगज़ीन की और अपना कदम बढ़ाया और लेखन कार्य बिना अवरोध के आगे बढ़ता रहा।प्रिंट मीडिया से अगर तुलना करें तो ऑनलाइन में ख्याति,मुनाफा तथा पाठकों से नज़दीक संबंध बनाने का ज़्यादा अवसर मिलता है। विख्यात लेखकों द्वारा लिखे गए किताब भी आर्थिक स्तर पर बिकाऊ नहीं रहता। मैनेजर पांडेय जी के अनुसार 'आजकल हिंदी कविता की स्थिति अत्यंत विचित्र है। कवियों को एक से बढ़कर एक पुरस्कार मिल रहे हैं ,लेकिन कविता को पाठक नहीं मिल रहें हैं। जैसे -तैसे कविता की किताबें छप रहीं हैं,लेकिन अत्यंत सीमित संख्या में किसी भी कविता-संग्रह की एक हज़ार से ज़्यादा प्रतियाँ नहीं छपती। वे भी अगर सरकारी खरीद नहीं हो तो दुकानों में पड़ी रहती है।[2] सोशल मीडिया में वाईरल होने की संभावनाएं अधिक है, आर्थिक स्तर से ज़्यादा लोग आजकल मशहूर होना चाहते हैं। यहाँ पाठक सीधे मुंह पर विमर्श,आलोचना एवं सराहना करते हैं और लेखकों को भी आत्मनिरीक्षण करने का अवसर मिलता है। मनुष्य जीवन में ज्ञान और संवेदना को आपस में जोड़ने का महत्त्वपूर्ण दायित्व साहित्य निभाती है । भावपक्ष को प्रधानता देने

[2] मैनेजर पांडेय,आज का समय और कविता का संकट,हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान,वाणी प्रकाशन,पृ 205

वाले पाश्चात्य विद्वान वर्ड्सवर्थ ने 'शांति के समय स्मरण किए हुए प्रबल मनोवेगों के स्वच्छंद प्रवाह के रूप में कविता को स्वीकारा है' ।कविता दृश्य के बाहर दृश्य रचती है और यह केवल शांति के समय ही नहीं अशांति तथा अकाल में भी लिखी जाती है तथा आतंरिक विस्भोटों को वाणी प्रदान करती है। कविता स्वयं घटित होकर हमारे हृदयपक्ष और भावपक्ष के अनदेखे सूत्रों ,अनचीन्ही कड़ियों,अनजाने आभासों को जोड़ने में सक्षम है।

'हिंदवी' में कोरोना के दौरान कई सारी कविताएं प्रकाशित हुई जो काफी हद तक सार्थक एवं सारगर्भित थी ।मदन कश्यप की कविता 'जब हम घरों में बंद थे' महामारी से संत्रस्त श्रमिकों, गांव की ओर लौटते मजदूरों और विस्थापन से जूझती भुखमरों की छवि प्रस्तुत करती है। दूर से देखने पर सिर्फ वे झुंड लगते थे और गौर से देखने पर मनुष्य।वस्तु जगत की नैमिषिकता का चित्रण कवि करते हैं। भूख से रोते-बिलखते बच्चों को एक वक्त का खाना मिल जाए वही उनके लिए काफी था। निराशा के घोर अंधकार में भी उम्मीद की एक किरण दर्शनीय है।

कवि कहते हैं :-

'जली हुई झोंपड़ी के मलबे में,

जलने से बची रह गई,

एक गुड़िया की तरह

बची हुई उम्मीद के सहारे ।'

विष्णु नागर की छोटी कविता 'लॉकडाउन के बीच पटरी पर नींद' भी बदहाल मजदूरों एवं पटरी पर आए जिंदगी पर व्यंग्य करता है । पंकज चतुर्वेदी जी की कविता 'आंकड़े' हमारे समाज के सम्मुख एक प्रश्न चिन्ह खड़ा करती है। क्योंकि मृत्यु के उपरांत व्यक्ति अपना अस्तित्व खो जाता है और सिर्फ आंकड़े बन जाते हैं। मरीज़ों से भरे अस्पताल में डॉक्टर इस सोच में थे कि किसे बचाएं बुजुर्ग को या युवा को? सरकारी आंकड़े में मृतकों की संख्या में हुई अदला-बदली की ओर लेखक संकेत करते हैं।

'यह आंकड़े तो शहर के

श्मशान घाटों, विद्युत शवदाह गृहों

और क़ब्रिस्तानों से लिए गए थे

अलबत्ता नगर निगम के मुताबिक

उस दिन कुल 103 लोग ही दिवंगत हुए।'

विख्यात कवि अशोक वाजपेई जी की कविता 'हम अपना समय लिख नहीं पाएँगे' मानव जीवन की नश्वरता का चित्रण करते हैं। कवि कहते हैं कि यह जो कुसमय आ पड़ा है, यह हमारा नहीं है और इससे बचने या भागने का कोई रास्ता भी नहीं है।

'इतना सपाट है यह समय

कि इसमें कोई सलवटे,परतें,दरारें नजर नहीं आती

और इससे भागने की कोई पगडंडी तक नहीं सूझती।

हम अपना समय लिख नहीं पाएंगे।'

कवि का कहना है कि क़ुदरत पर कब्ज़ा करने वाले इंसान का सारा घमंड मिट्टी में मिल गया और समय हम पर हंस रहा है। अनुराग अनंत जी की कविता 'महामारी के दिनों में हमारे' हृदय में एक जलन पैदा करती है। कोरोना के कारण हर दिन कई सारे लोगों की मृत्यु हो जाती है और मृत्यु का एक विकराल रूप तांडव करते हुए नजर आता है।

अनुराग जी कहते हैं :-

'सूखे हुए फूलों को देखकर बहुत रोए हैं हम ।

फूलों को सूखते हुए देख कर पहली बार रोए,

पछताए, अपराध बोध में डूब गए।

मरे हुए को देखना और मरते हुए को देखना

एकदम अलग-अलग चीज है।'

मनुष्य की महत्वाकांक्षा,विज्ञान एवं समय के हिसाब से बढ़ता गया। परंतु यह एक ऐसा समय था जहाँ तरकस के सारे महाअस्त्र निष्प्रभ हो जाते। सब कुछ हासिल कर स्वयं ईश्वर बनने वाले मनुष्य नियति के सामने घुटने टेक कर हाथ पर हाथ रखे मौन सब का साक्षी बना। विमल चंद्र पांडेय, कुकाल में मनुष्यता पर अपना विचार प्रस्तुत करते हैं। 'मनुष्य' नामक उनकी कविता हम से संवाद करती है। वे कहते हैं :-

'यह समय मौतों के लिए मुफ़ीद है,

मनुष्यों की अकाल मौत का(कोलाज़) रचता हुआ।

फिर भी’

मैं मरते हुए भी, अपनी मनुष्यता बचाए रखना चाहूंगा,

यह मेरा जवाब होगा कि मैं बचाए जाने लायक था,

कि हम बचाए जाने लायक थे।‘

मरते समय भी अपनी मनुष्यता बचाने की ललक यहाँ हम देख सकते हैं। साथ ही स्वार्थ मानविकता को यह सोच भी प्रदान करती है कि 'मैं' और 'हम' की दूरियों को कैसे मिटायें। प्राकृतिक आपदाएं,अकाल एवं महामारी संघर्ष तो पैदा करती है साथ ही स्वार्थी बनते मानव के लिए चेतावनी भी देते हैं।नश्वर जिंदगी पर घमंड करने वालों को आगाह करते हैं। जागो और अपनी इंसानियत न खोओ।

समकालीन कविता जीवन संघर्ष ,वर्ग संघर्ष ,व्यक्ति निराशा ,भय ,आशंका एवं अनिश्चचय आदि कई मुख्य मुद्दों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती है।समय कैसा भी हो,हालत कैसी भी हो साहित्यिक गतिविधियाँ तो चलती ही रहेगी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण महामारी के समय का साहित्य है। डिजिटल युग में 'हार्ड' एवं 'सॉफ्ट' प्रतियाँ,ज़माने के हिसाब से विवादस्पद है, फिर भी साहित्य को संपुष्ट करने के लिए दोनों ही अनिवार्य रूप से सहायक है। फ़र्क सिर्फ इतना है कि एक नए किताब को हाथ में पकड़ते समय उसकी जो ख़ुश्बू और स्पर्श से मिलता जो सुकून है वह हाथ में 'किनडल' पकड़ते नहीं मिलता। जीवंत अनुभूति की अभिव्यंजना एवं संवेदनात्मक मूल्य वहाँ घटता हुआ दिखाई देता है। परन्तु सुविधा ,स्वीकृति एवं उपलभ्यता के अनुसार विज्ञान की देन इस नई मीड़िया संस्कृति को अनदेखा नहीं कर सकते। [3]

[3] https://www.hindwi.org/

http://kavitakosh.org/